आखरी उम्र मे नेकियों की कसरत

मुफ्ती अहमद खानपुरी (दब)

हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू से इसका खुलासा लिप्यान्तर करने की कोशिश की गयी हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

ज़िन्दगी के आखरी अय्याम मे नेकियों की कसरत करे

वैसे तो आदमी को चाहिये के पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की इताअत और फरमाबरदारी मे ही इस्तेमाल करे, चुके पूरी ही ज़िन्दगी के मुताल्लीक सवाल होगा जैसे के हदीसे पाक मे हे के कयामत के रोज आदमी के कदम अपनी जगह से नहीं हटेंगे जब तक के पांच चीज़ो के मुताल्लीक सवाल नहीं होगा (सुनन तिर्मिज़ी हदीस/१४३२).

मुस्लिम शरीफ की रिवायत हे के जब तक चार चीज़ो के मुताल्लीक सवाल नहीं होगा उन मे से पहली चीज़ हे ज़िन्दगी को कहा गवाया और खर्च किया.

ज़िन्दगी अल्लाह ताला की दी हुई बहुत अज़ीम नेमत हे सारी नेमते इसी नेमत के ऊपर मौकूफ हे अगर ज़िन्दगी न होती तो बाकी सारी नेमते कहा हासिल होती इसी लिये ज़िन्दगी की इस नेमत की कदरदानी के मुताल्लीक कुरान व हदीस मे बडी ताकीद आई हे और रसूलुल्लाहﷺ ने जहा एक मौके पर कहा की पांच चीज़ो को पांच चीज़ो से पहले गनीमत समझो उसमे आखरी चीज़ बतलाई थी अपनी ज़िन्दगी को अपनी मौत से पहले गनीमत समझो.

आखरी अय्याम मे जब ये अंदाज़ा हो के दुन्या से जाने का वकत करीब हो रहा हे उन दिनों मे आदमी को सरे कारोबार व माशगिल और सब कुछ छोड-छाड कर अल्लाह की याद और नेकी के कामो की तरफ मुतवज्जेह हो जाना चाहिये अल्लाह ताला ने कुराने पाक मे और रसूलुल्लाहﷺ ने अहादीसे मुबारक मे इसी की तरगीब दी हे और इसी की तरफ आमादा किया हे. ज़िन्दगी के आखरी दिनों मे खैर के कामो मे ज्यादा मशगूल होने की तरगीब दी जा रही हे और उसका शौक दिलाया जा रहा हे.

इतनी उम्र नहीं दी-थी से कितनी उम्र मुराद हे

अल्लाह ताला इरशाद फरमाते हे क्या हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी के जिस मे कोई आदमी अगर नसीहत हासिल करना चाहता नसीहत हासिल कर सकता था सुधारना चाहता तो सुधर सकता था अपने हालत दुरूस्त करना चाहता तो कर सकता था इतनी उम्र दी थी और साथ ही साथ अल्लाह ताला की तरफ से डराने वाला भी आया थे वारनिंग देने वाला और बताने वाले भी आये थे के उसको जरा गनीमत समझो और गफलत मे न गुजारो.

अल्लामा नौवी (रह) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रह) और दूसरे हज़रात ए मुहक्क्किन का कॉल ये हे के ६० साल हे, यानी हमने तुमको ६० साल की उम्र नहीं दी थी ६० साल की उम्र गोया इतनी हे के उसमे आदमी बहोत कुछ हासिल कर सकता हे.

जिस्को ६० साल की उम्र मिली

हज़रत अबू हुरैरह (रदी) की रिवायत हे नबी अकरमﷺ ने

इरशाद फरमाया अल्लाह ताला ने उस आदमी का उजर खतम कर दिया जिसकी मौत को मोअरव्खर किया यहां तक के ६० साल की उम्र पायी, यानी जिस को ६० साल तक दुन्या मे रहने का मौका मिला कयामत के रोज उसके लिये अल्लाह ताला के सामने कोई उजर करने का मौका नहीं रहेगा, जैसे दुन्या मे भी होता हे किसी को कोई काम सोपा जाता हे तो वो कहता हे जरा मौका दीजिये तो मे ये काम करलु मुझे मोहलत दी जाये.

यहां अल्लाह ताला ने आदमी को हुक्म दिया हे के इताअत और फरमाबरदारी करे और अल्लाह ताला की खुशनूदी हासिल करे तो जिन्हो ने अपनी ज़िन्दगी गवा दी हे वो कयामत के रोज अल्लाह ताला के सामने माफी करते हुये ये उजर पेश करेंगे के बारी ताला हमे मौका दिया जाता तो हम कुछ करके लेते.

नबी अकरमﷺ फरमाते हे के जिस को ६० साल ज़िन्दा रहने का मौका मिला उसको कल कयामत के रोज ये कहने का मौका नहीं रहेगा के मुझे कुछ मौका दिया जाता अल्लाह ताला की तरफ से कहा जायेगा के ६० साल तो दिए थे इतना ज़िन्दा रहा

लेकिन अपने आपको ठीक नहीं किया, अपनी इस्लाह नहीं की, अपनी हालत दुरूस्त नहीं की, नसीहत हासिल नहीं की, दीनदारी इख्तियार नहीं की, अब कितनी ज़िन्दगी दी जाती जिस मे तू सुधरता ये तो तेरा बहाना हे.

जैसे किसी को पढने लिखने का मौका दिया जाये फिर इम्तिहान लिया जाये और वो कहे के मुझे जरा मौका दिया जाये तो उसको क्या कहेंगे इतना ज़माना तो दिया था उसके बाद तुझे क्या चाहिये ऐसे ही यहां पर भी हे.

अहले मदीना का मामूल

बाज़ हज़रात ने ४० साल कहा हे चुनांचे हसन बसरी कलबी मशरुक वगैरा हज़रात फरमाते हे जिसको ४० साल ज़िन्दा रहने का मौका मिला गया उसको दुन्या में इतनी उम्र मिली हे के वो अपने अहवाल दुरूस्त कर सकता हे.

हज़रात इब्ने अब्बास (रदी) से भी दूसरा कॉल इसी तरह मन्कूल हे. और ये भी नकल किया गया हे के मदीना वालो में से जब किसी की उम्र ४० साल हो जाती थी तो वो अपने आप को

अल्लाह ताला की इबादत के लिए फरिक कर लेते थे यानी ४० साल उम्र पहुँचने के बाद सारा कारोबार छोड़-छाड कर अल्लाह ताला की इबादत में लग जाते थे.

बाज़ हज़रात यु कहते हे के ४० साल में जिस्मानी ऐतेबार से (बुलुंग) बालिग होना अलग हे यानी रूहानी ऐतेबार से अल्लाह ताला की मारिफत हासिल करना करने के लिहाज़ से ये ४० साल बुलुंग के वक्त हे. बाज़ रिवायतों में ये भी हे के अहले मदीना की जब ४० साल की उम्र हो जाती थी तो बिस्तर लपेट कर रख देते थे के अब सोने के दिन गए अब तो मेहनत का वक्त आ-गया हे.

हमें इस बात की तरफ मुतवज्जेह किया जा रहा हे के आदमी की उम्र का एक हिस्सा गुजर जाये उसके बाद तो उसको अपने आप को अल्लाह ताला की इबादत के लिए फरिक कर ही लेना चाहिए.

मलीकुल मौत से बात-चित

अल्लामा कुर्तुबी (रह) की एक किताब हे उसमे उन्होंने

अल्लामा इब्ने जावजी (रह) की किताब के हवाले से एक रिवायत नकल की हे.

मुफ्ती सफी उस्मानी (रह) के हवाले से मुफ्ती तकी उस्मानी (दब) ने ये वाकिया अपने खुतबात के अंदर ज़िकर किया हे के हज़रत वालिद साहब फरमाया करते थे के किसी ने मलीकुल मौत से यूं कहा के दुन्या के हुकुमतो का दस्तूर हे के किसी के नाम जब वारंट जारी किया जाता हे तो पहले उसको नोटिस दी जाती हे उसको आगाह किया जाता हे जब दो तीन नोटिस के बाद भी वो तवज्जुह नहीं करता तो फिर उसके नाम सर्च वारंट जारी करते हे के उसको फौरी तौर पर गिरफ्तार करके लाया जाये, लेकिन आप का दस्तूर तो अजीब हे के आप तो बस धमकाते हे और रूह कब्ज़ करके चले जाते हे.

मलीकुल मौत ने कहा मे इतने नोटिस भेजता हूं के दुन्या की कोई हुकूमत इतने नोटिस नहीं भेजती होगी, पूछा आप के नोटिस किया हे मलीकुल मौत ने कहा बालो का सफेद हो जाना ये मेरा नोटिस हे, बीमारिया और इमराज ये मेरा नोटिस हे, सुनवाई की सलाहियत का कमज़ोर हो जाना ये मेरा नोटिस

हे के अब जाने का वकत आ-रहा हे, बशारत का कमज़ोर हो जाना ये मेरा नोटिस हे, घुटनो मे दर्द सुरू हो गया ये मेरा नोटिस हे, औलाद की औलाद हो गयी ये भी मेरा नोटिस हे, मे तो इतने नोटिस भेजता हूं के दुन्या की कोई हुकूमत इतने नोटिस नहीं भेजती होगी फिर भी लोग मेरे नोटिस को नोटिस नहीं लेती तो मे क्या करू.

मालिकुल मौत के राजदूत (एम्बेसडर)

इसमे ये हे के एक नबी (अल) ने मालिकुल मौत से कहा आप अपनी आमद से पहले राजदूत नहीं भेजते ताके लोग तैयारी करले उन्होंने कहा अल्लाह ताला की कसम बहुत सरे राजदूत भेजता हूं बीमारिया, बुढ़ापा, गम, फिकरे, बिनाई के अंदर कमी आजाना, सुनने की सलाहियत मे कमी आजाना, ये सब मेरे राजदूत हे मेरे मुखबिर हे जो खबर दे रहे हे के मे आ-रहा हूं, जब कोई आदमी इन सारी वार्निंग से भी अपने आपको नहीं सुधरता, नसीहत हासिल नहीं करता और तौबा नहीं करता तो जब मे रूह कब्ज़ करने के लिये आता हूं, उस वकत उसको यूं

कहा करता हूं के मेने एक के बाद एक राजदूत तेरे पास नहीं भेजे डराने वाले नोटिस नहीं भेजी अब मे वो राजदूत हूं के अब मेरे बाद कोई राजदूत आने वाला नहीं हे मे ऐसा डराने वाला हूं के अब मेरे बाद कोई डराने वाला नहीं हे मे आखरी नोटिस हूं और वारंट बनकर आया हूं.

मालिकुल मौत की रोजाना पुकार

और जब भी कोई दिन तुलु होता हे तो मालिकुल मौत आवाज़ देता हे ए ४० साल की उम्र वालो ये तोषा तैयार कर लेने का ज़माना हे तुम्हारे जहा हाज़िर हे तुम्हारे आजा बडे मजबूत और कावी हे गोया आखिरत के लिये तोषा हासिल कर सकते हो फायदा उठा लो.

फिर ये भी आवाज़ देते हे ए ५० साल की उम्र वालो खेती की कटाई का वकत आ चुका हे तैयारी कर लो और ये भी आवाज़ देते हे ए ६० साल की उम्र वालो अल्लाह ताला के अज़ाब को भूल गये कल को अल्लाह ताला के सामने जवाब देना हे.

उसकी तरफ से गाफिल हो गये तुम्हारा कोई मद्दगार नहीं हे

अगर तुमने इसके बाद भी गफलत बरती तो अब तुम्हारा कोई वकील और मद्दगार नहीं हे.

और फिर ये आयत पढते हे जिस का तर्जुमा ये हे किया हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी के जिस मे कोई आदमी अगर नसीहत हासिल करना चाहता तो नसीहत हासिल कर सकता था और डरने वाला भी भेजा.

ये वकत हम पर भी आने वाला हे

डराने के वास्ते तो बहुत सारी चीज़े हे हम रोजाना अपने आस पास, अपने दोस्तों मे से, अपने अज़ीज़ो मे से, अपने पडोशियो मे से, बहुत से लोगो को दुन्या से जाता हुवा देखते हे, अपने हाथो से उनको गुसल देते हे, अपने हाथो से उनको कफन पहनते हे, अपने हाथो से उनका जनाज़ा उठाते हे, अपने हाथो से उनको कबर पर ले जाते हे, जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हे, कबर मे उतार ते हे और अपने हाथो से दफन करके वापस आते हे, ये सब करते हे लेकिन कभी हमे भूले से भी ये ख्याल नहीं आता के ये वकत हम पर भी आने वाला हे.

रिवायतों मे हे के मालिकुल मौत हज़रत दाऊद (अल) की

खिदमत मे हाज़िर हुये उन्होंने कहा मे वो हूं जो किसी बादशाह से नहीं डरा करती, मे वो हूं के कोई किला उसको आने से रोक नहीं सकता, मे वो हूं के कोई रिश्वत कबुल नहीं करता के ले देकर (सेटलमेट) कर लिया जाये दुन्या मे तो बडे से बडे मामले मे (सेटलमेट) भी हो जाता हे और आज कल तो बहुत आसान हो गया हे लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं हो सकता हे. हज़रत दाऊद (अल) ने कहा फिर तो आप मालिकुल मौत हे उन्होंने कहा जी हां मे मालिकुल मौत हूं, कहा मेने अभी कोई तैयारी नहीं की कहा तुम्हारा फला रिश्तेदार कहा हे, तुम्हारा फला पडोशी कहा हे, तुम्हारा फला दोस्त कहा हे, कहा वो सब मर गये कहा बस उन सबकी मौत के बाद भी इबरत हासिल नहीं की और अपने लिये तैयारी नहीं की.

हकीकत तो ये हे के जो दुन्या से जा रहे हे वो हमे मुतानब्बेह कर रहे हे हमारे लिये इबरत का सामान मुहैया कर रहे हे के हम तो जा रहे हे आप के पास वकत हे आखिरत के लिये तैयारी कर लीजिए जरूरत इस बात की हे के हम उसका एहतेमाम करे और खास कर उम्र की वो मंज़िल जिसके बाद आम तोर

पर ये मरहिल आते हे उसमे तो आदमी को तैयारी करने मे लगी जाना चाहिये.

जैसी ज़िन्दगी वैसी मौत

हज़रत जाबिर (रदी) से मन्कूल हे के नबी अकरमﷺ ने फरमाया आदमी जिस चीज़ पर वफात पाता हे इसी पर उठाया जायेगा, इमान की हालत मे वफात पायी तो इमान की हालत मे उठाया जायेगा, अमले सालेह के साथ और अच्छे इरादों के साथ उठाया जायेगा, इसलिये हुकम दिया के तुम्हारी मौत ऐसी हालत मे आये के तुम मुस्लमान हो. मौत कब आयेगी इसकी कोई गारंटी नहीं हे इसलिये आदमी को इस बात का एहतेमाम करना चाहिये के वो हमेशा अपने आप को अच्छे अमल ही के अंदर मशगूल करे ताके जब भी मौत आये तो अच्छी हालत मे आये और खास कर मौत का वकत जब करीब आया हो तो उसका और ज्यादा एहतेमाम होना चाहिये.